

૫૧૩૮

$\frac{10}{92}$ ૨૫૭

ભાગપેહેલો.



કોમલ
૪
આજ

પ્રસિદ્ધ કરનાર
દેલાભાઈ લીલાધર

સને
૧૯૯૩
મુંબઈ.

સ્વધર્મનીષ પ્રેસ-મુંબઈ-માંડવી.

વૈષ્ણવ ધર્મ પ્રકાશ રાગમાળા

ભાગ પેહલો.

દોહા.

જે બાની દાંની સુમતિ ગુનખાની જગમાત,
સુખસાની તેરી કૃપા ચાહત નિત અવદાત.

આરતી.

મંગલ આરતી શ્રી હરિહરકી બ્રહ્માદિક સુરમાજે । કનકચાર
કંરપુરકી બાતી જગમગ જોતિ પિરાજે ॥ સ્યામ સેતધન
કુંદસાહાવનકો ટિન્હર બિહબિહાજે । મણિગણહારમાલ
અહિગણકો બામશિવાશ્રી બાજે ॥ ગાનકરત સખદેવમનોહર
બહુબિધિબાજનખાજે । રતનસિંહાસન બલકત પ્રભુકે દેખમ
નોભવ ભાજે ॥ સારદશેષ સિદ્ધગુન ગાવત છોડીસકલબ્રમ-
કાજે । બિશ્વરૂપમહિમાહરિહરકો ગાવત શૃતિ સિરતાજે ૧॥

બજન.

પરબ્રહ્મ ધન તુમહારી માયા જીન યહ જગત લુભાયા હે ।
કોઇ અંધા કોઇ લુલા કાના કોઇ સુન્દર બરન બનાયા હે ।
કોઇ દરિદ્ર કિયા નાય કોઈ સંપતિ મેં ભરમાયા હે ॥
કહિં ધરતી પર ધાસ ઉગતી કહિં અમૃત ઉપજાયા હે ।
કહિં બરખે કહિં બુંદ ન પડતી, કહીં ધૂપ કહિં છાયા હે ॥
કોઇ ઘોડે ચઢ મૂછ મરોડે કોઈ સંગ દોડાયા હે ॥
હરચરન કહે કરતાકી કુદરત કિયા વહી જી ચાચ્છ હે ॥ ૧ ॥

सिजन-
 अतः समरे मनुजो मेरे अके दिन धरना होवेगा, काम
 कोष मर दोल मोहकी संपत्ति बहुत लु गवेगा ।। पा
 ट पडा टसका नहीं लवे पडा पडा मुभ लवेगा ।। ल
 प करेड आनये पांसा इनको नाहक भोवेगा । पुंछ गछ
 हाथ नहीं अहे लेभा हे हे शेवेगा ।। लव पकड यमरा
 ल लछ लछहीं पर पसारि शेवेगा । हरयरन कहे मज
 राधाकृम यही पाप तेरे भोवेगा ॥ २ ॥

सिजन.

जग गया तप सोना क्यारे । जे नर तन देवनको दुल्ले
 सो पाया अथ राना क्यारे ।। दारा सुवन सदन में इसी
 के लार सपी का होना क्यारे । हीरा हाथ अमोल्य पाया
 हाथ भाव में जोना क्यारे ।। हाकुर से कं करि नेह अथा
 ना धन्दिन का सुभ होना क्यारे । जम जैगम ज्ञान उर आ
 या तप यांही औ सोना क्यारे ।। जे दाता मुभ भागे हे
 वे तप डोरी म होना क्यारे । गिरिधरदास उदर पुरे प
 र भीडा ओर सलोना क्यारे ॥ ३ ॥

सिजन.

राम कृतीरी रंग अमीरी हमरी सेर नहीं हे ।। मंड मु
 जया गेइवा रंगा दल वा रंज यही हे । यह यमारिन न
 य नाय नयावे कुछ नहीं जत कही हे ।। तिलक लगाया कं
 ही पांधी ओटी याल मही हे । तिलक लहाया मोह नदी
 में माला जत लही हे ।। छडे पंजे में पड हरदम लुं
 म लुग इर सही हे । माभन तो अलगंट गंवाया पाया
 छाछ मही हे ।। जिसने पुरा भाव कथायतिसकी साप रही
 हे । देव जतन कर राम मिलन की साप्ती सान यही हे ।।

लज्जन

काँई सक्ष न देया हिलका । सोया जना जिल मिलका ।
 काँई मकुषा काँई भीली देया पहिरे इकारी पीलका ।
 जाहेर मुष् से लान छांटता भीतर जेरा छिलका । राम
 लज्जन में जलज आलसी जेसे भरा मल्लका । और न
 उ पिसमे में सुखा परतर सोठा सील का । पढे गुने क
 छु जैसे वैसे महां धमंड अकिल का । जहरी सधुन मुष्
 से निकले मंसल सांप के पीलका ॥ राम लज्जन यिनु जप
 तप जुठा जुठा आस इल्लका । क्या कहिये गुरदेव न
 पाया महरम आप के तिलका ॥ ५

लज्जन

लज्जनत कस नहीं रे जहगुरेया । कंयन पलंग पिछाना
 गुल गुल तकिया और हुलेया । ता छियर गलत किया
 याही लज्जने में रोग देया । तीन भेर भाये के याही भी
 सरी दुध भलैयां ॥ अंतर मले लज्जनेकी भेरीया आलस
 यो जमुहैया । जेलत हुंसत तीनी पन भीते पहुयल आ
 य मुहैया ॥ आछ अयानक काल गरासी के उ ना करि हे
 सहैया, देव तनके मिस आप भाव हे दिन से करत
 लंछैया ॥ स्थान इअ में लनिक न आवत छोड कपट य
 तुरीया ॥ ६ ॥

हुमरी

यसुदा के आरे धारे पंसी इर लज्जने । ॥टेका पीतपसन
 ही कछनी कछे कुंज मलीन में डालत आछे उर अनमाल
 यल मतवाली नटवर वेष तुं आ लरे । कहे हरचरन छडी
 अंजनारी रति रम्भा सुष् जेहे हारे कटिमदन सोल
 पर वारी अदलुत रूप दिपाजरे । यसुदा के आरे १

(४)

कुमरी

कान्ठ परनेरी कीन्ही रे मोसो; कुंजमलिन में आन कान्ठ
परनेरी कीन्हीरे ॥टेका ॥ कुंवर कन्डाध यित लियोहे सुराध
ऊसी अंसिया अजध मति हर लीन्ही रे (कान्ठ) कंसि
सुरकाय आय अंगुरी नयाय धधि होन्ही हरकाय मटकी
छीनी रे (कान्ठ) हरयरन कहे सारी काढी वृज्जनारी गारी
दीन्ही अनवारी अनरीत कीन्ही रे । कान्ठ परनेरी कीन्ही
परनेरी कीन्ही रे ॥ २ ॥

भेमरा

नयनन की मत मारे तरवरिया भेतो धायल प्पिनु बोढ
अध रे कहर करेजे करिया ॥ काहे जो सान हेत भोडन की
काजर नेनन भरिया । हरीयन्द प्पिन मारे भरत हय मत
लाओ तीर कटरिया ॥ १ ॥

सोरठ

हमारे धर आछयो हो सुन्दर स्याम ॥टेका॥ मनभोहन अति
यतुर छपिले अगं अंग अभिराम परसाने सञ्जाकी
प्पिरिया कीरति गु क धाम । सप्पी रुप करि परम अनु
पम स्यामा कडियो नाम ॥ तय में आय मिलुंगी पुम से ।
आनंद आठो जम । गिरधरदास कहत बां राधा नय
सिध रुप ललाम ॥ १ ॥

लैरवी

सुभिरा मन प्रातकाल शुष्निधि गिरधरनलाल पंकज
लोचन पिसाल कुंकुमकी तिलकजाल अञ्जीकी हर भोवि
माल आवत लडकीती याल ॥ कुंडल सत ससी प्रकास
स्याम अलक ताके पास उहे सधल कीनो प्पस कुषों प्पिनि

(५)

ज्यास ज्यास सिर पे बढकीती पाग देपहिं तिय भरि
सोहाग गोकुल के लुरि नाम आवतीं निहास हाथ ॥ कन्ध
धरे असन पीत भरसत नव प्रीत रीत सोभित नव नीत
भीत करध्या कर श्रीगोपाल । अस्सल पद कमल आस आवत
गिरधरनदास उर महीं मम कीजे आस मोहन अतिही
कृपाल ॥ १ ॥

विहाग

उधो कथ जेहे वृजरान । हम सथ कर मुधि नद्य विसा
रेड लुलि रान समान ॥ अेक पलक सत कथप पिततुं
हे नहिं सुकृत कषु कान । करि अति प्रीत मोहनी जारे
प्रभु नदेवर सिरतान ॥ छन्दिय गधु गति बयेड यकित
अति लुमि अटेर सपि आन । विश्वरूप हरि सों कडियो
अस करिये सरनकी खान ॥ १ ॥

महीार

आन होडि जुसत रंग भरे, सनिसथ सान हरे । हरित
कुंज अन लता हरित हे तरिवर हरित हरे हरित लुमि
नम हरी हरीमय पंछी हरित अरे ॥ हरित डिंडोला हरित
जार में हरित डोर नकरे ॥ हरित असन लुपन ओ आ
सन आमर हरित हरे । हरित सभी होडि ओर लुलावत
मेध राग उयरे ॥ होडि किशोर तेहि मध्य लसत हे ह
रित छत्र सिर धरे । कोर्छल कीर मोरगन क मिस देआ
हि देव अरे ॥ २ ॥

कनरी

कहे मोसे लुपरा लमाजे वांके मोहना । करके प्रीत हमको
तन हीना मयुर नगरिया में छामे वांके मोहना ॥ कहे
नपसे मजे सैयां सुधिहु न सीनी कुण्ज सौत अनाजे

વાંકે મોહના ॥ કાહે ॥ જમુના તઠાળંસીબટ જોકુલ બિન્દા
બન બિસરાએ વાંકે મોહના ॥ કાહે ॥ વા દિનકી. સુધ ભુ
લ ગએ સખ ઘન માંગઃ દુધિ ખાએ વાંકી મોહના ॥ કાહે ॥
સાવન માસ ધટા ધન ગરજે બિગુલી ચમક ડરપાએ વાંકે
મોહના ॥ કાહે ॥ ભાદોં મેં કજરારી બદરિયા ઝમકી ઝુમ
ભરિ લાએ વાંકે મોહના ॥ કાહે ॥ લાલ બિહાલ ભધ હે ગ્વા
લિન પાવસ કહવાં બિતાએ વાંકે મોહના ॥ કાહે ॥ ૧ ॥

કજરી

બસં અજબ મહલ રે હમારે પતિયાં દસ દરવજયાં બમે
સખ સખિયાં પિયા કે મનાવે નહિં સુને બતિયાં ॥ કરતિ
કલોલ દેખાવત ભોબહિ નયન સખન દરસાવે મનિયાં
બિશ્વરૂપ યહ નગરિ ન એહો મેટિ રે ગઘલ દુખ બરસતિયાં

રેખતા

સખીરી નન્દ કે નન્દન તેરે ધર આજ આવેગે.

(દોહા) તોપર વાર ઉરબસી સુન રાધીકે સુખન ॥

તું મોહનકે ઉર બસી હે ઉરબસી સમાન ॥

તુહી એક ઉર બસી હરિકે દુજી નહી ઉરબસી

હરિકે હગરૌ ઉર બસી હરિકે તુહી કે મન મિલાવે ગે

સખીરી નન્દ કે નન્દન તેરે ધર આજ આવેગે ૧

(દોહા) જે બરસાને ઉર તેરે તે બરસાને નેહ

હરિ બરસાને આયહે રસ બરસાને મેહ ॥

તેરા યહ દેહ બરસાના ઉન્હે. કા નેહ બરસાના

દુતર્કા મેહ બરસાના બરસ લાખો નિલાવે ગે ।

સખીરી નન્દ કે નન્દન તેરે ધર આજ આવેગે ॥

(દોહા) લાલ લાલ સારી તેરી જે દેખી નન્દલાલ

ભધ લાલસા રી ઉન્હે દેખત કી ઈહી કલ ॥

धर नन बाप सारी हे उधर मन बाब सारी हे
 होनी दिव बाबसारी हे भिख जेहर दिभावेगे ।
 सप्लीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आन आवेगे ।

(टाडा) पनवारी के पुल मुन पनवारी नय माल ॥
 पनवारी उर डर हरि जेपन, वारी पाल ॥
 अरी सधे अभी सुप सेन पनवा री जेपनवारी
 नागर प्रभु स्याम पनवारी लखक हृद लगावेगे ।
 सप्लीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आन आवेगे ॥२॥

गजल,

नहीं राके से शक्ति हे तपीयत आध जाती हे ।
 हे सो जय सामगे आती हे उदकृत आध जाती हे ॥
 भियावेगे सुये सय गु में सामत आध जातीहे ।
 मेरे दीलके दडित मुजपे आकृत आध जातीहे ॥
 तुंमारे छिन्ने रातो डा जिस दम सरपटकता हुं ।
 जयां पर माल के जिस वक्त लजगत आध जातीहे ॥
 मुझे दरदे मुहयत ने किया हे नातवां लेकिन ।
 धयादत का जे वह आते हे ताकत आध जातीहे ॥
 छनरी गालियां जय तुंम मुझे जे वजह देते हे ।
 तोमेरी भी जयां पर कुछ शीकायत आध जाती हे ॥
 मोरोवत तर्क की उस शोष ने मिल कर रकींमोसे ।
 मसल मसहुर हे तासीर मुहयत आध जाती हे ॥
 सहर तक मिनतों करतेहि करते वस्व के सय डा ।
 य मुशकिल अेक दो मोसो की नोयत आध जाती हे ॥१॥

गजल.

क्यों मिला जलिम से न दिव डाय दिव अइसोस दिव ।
 पीयता हे क्या नइ दिव डाय दिव अइसोस दिव ॥

तेने आलम छे किया हे कतल मेरे देपते ।
 गुज सीतमजर से मिला दिल डाय दिल अइसोस दिल ॥
 किस परीङ्गे छिपाया दिल मेरा मिलता नहीं ।
 दुंढता दुं क्या हुवा दिल डाय दिल अइसोस दिल ॥
 जनता या में कि वह आलम निपट ये रहम हे ।
 क्यों हुआ या मुप्पतिला दिल डाय दिल अइसोस दिल ॥
 देपकर इस मनहरन के मुअसे होकर अप्प गुदा ।
 किस तरह से रम गया दिल डाय दिल अइसोस दिल ॥
 किरने न पुछुं कहां दुं दुं निशा पाता नहीं ।
 क्या हुआ तायां मेरा दिल डाय दिल अइसोस दिल ॥२॥

गजल

किसी परदेनसीका हे शोक लका कोई तरह अप्प असोपता
 हे मुअे । कि उठाके वह परदह सरमी हया नरा अपना नमा
 ल दीया हे मुअे ॥ तेरे देपने की तो हे सेंकडो ह्य नहीं
 देपता में तो यही हे सय्यम । कि तजली दुस्न से परके
 गजल कहीं असा न हो कि जला हे मुअे ॥ मुअे कतल किया
 तोय उसने कहा कि तु रंजे अजल से छुंट गया ।
 तेरे साथ य मेने सलुक किया मेरे कुस्तेनाज हुआ हे मुअे ॥
 रही छतनी बी ताकतो ताप नहीं कि नमी से उठे
 अप्प य भाकनसी । तेरे कुंये की सिमत जला से कहीं
 मेरा गिरिये शोक जहा हे मुज ॥ कछ जपम तो पाछ
 पर आंज तसक मिली लज्जते छशक न जरे कलका मेरे
 जपमे जगर पे छिउक के निमक मज छशक जहा का य
 आ हे मुज लगे जातका मेरे ठिकाना कहांकी जल अक
 सपुन में वहुं सहरे जयां ॥ कबी अरस वरी पे यहा
 हे मुअे कबी इरस नमी पे गिरा हे मुअे नहो दामे अला

यक जिसम अमर कहें गुलशन कहसकी शेर नहर कोष
 ऐसा होकामिले पाक नहर किने कही जला से खुदाहे
 मुझे ॥ ३ ॥

गणल.

कुछ अमर पहले कटुरत ओ सहाप डीन थी वजह कोष
 खुलह ही सुरत लडापकी न थी हमने तो ऐसा समझ
 कर आसनाप डी न थी य तवउह हमको तुजसे भेवहाप
 ही न थी ॥ थी मुकदर तुमसे दर न मेरे दिल का आचना
 भे कहरतया छसे हाजत सहार्थकी न थी लग गया था प
 पहने कुंने कइसमें अपना दिल । हमकी ओ सेयाह कु
 छ परवा रिहाईकी न थी तुने किरके दीहमे पुर आव से
 पोछीथी अरक । आज वो सुर्फी तेरे इस्ते हिनाईकी न थी
 दिल इरेभों में जे उसना आसना कहा गया उसने
 क्या आगे किसी से आसनापकी न थी भाहानुं किरती लिये
 निकला था कहीं मिरसे गहा हुंरन से तेरे तमना गर गहा
 र्थकी न थी ॥ जनते थे येनसे गुनरेगी राते वरसकी हम
 नसीं हमको अमर राने गुहाप न थी ॥ गुल्ह उरकी हम
 से जल करने लगी नाहक नहर । दर न कोष अजह अंसी
 कन अहाप डी न थी. ॥ ४ ॥

गणल.

गणल हे जिस थुते कहरि पे अपना हम निकलता हे
 नया तथुते उसके कुंये से हरहम निकलता हे ॥ न रथ
 आंभों पे मेरे आरतीने लुह ओ हमहम किरके सुर्ष के
 हमराह दिल का गम निकलता हे. दिपा हर अपनी आं
 राईश परी मुजको न घोआ दे किसीके सदाःपन में आरही
 आहम निकलता हे नही अनिर में लाता वह मेरे

आम्रुरह होने का ये सुन रहाहै जलिम ने इसा दिय क
 म निकलता है ॥ समझ कर अजनबो से जिसे दिय का
 राज कहता हूँ अजल होता हूँ क्या जय जय वह तेरा
 महरम निकलता है ॥ अना देता है कुंचे इकका टेढे का भी
 सीधा प्रिया जय जंत्री में तार का सम अम निकलता
 है ॥ सखीदो से नही वाकि है हम हां छतना वाकि है
 कोछ रातो का मां करता हुंवा मातम निकलता है ॥ ५ ॥

गजल.

वस्त्र के सम भाभियाना. घरमे ताना याँहिये ।
 अपनी मसरत यस्म गरहु से छियाना याँहिये ॥
 अजम रिंदामे कीसीजी सरकमी जेया नही ।
 गरदने भीना को असेाकी जुकाना याँहिये ॥
 नन्हे नन्हे हाथी पर कशी है गुलमे हँदीका रंग ।
 तुं अभी नादां है क्या मेहेदी लगाना याँहिये ॥
 कोछ रावो कोछ पीटा कोछ अपना सीर धुपे ।
 आडे हरदम पान उनको मुम कुराना याँहिये ॥
 रातोकी तन हां न फिर हसराह आदिम है जहर ।
 हित नये महसरकी डोकर, से लगाना याँहिये ॥
 अहते है उसके गले में हर से परम भिन्नत के तडक ।
 अपने केदी की तुंजे भिन्नत अदाना याँहिये ॥
 अशक मजनुं का सखीदी जेय खेवीन दाया ।
 आशिके दिवाना का माशुक दाना याँहिये. ॥ ६ ॥



लावणी.

अलिङ्ग आप गणपतिः सभा में निरत करे नोमत अजती ।
 जे अरदानी भेला जिनकी दासी शक्ति अजला जिनके

गधु कहिये अलभेला सुन जिहर सुनी ॥ तें ता गीते आते
 संजु सैल करनको जाति नहाने जैही गौरा माते ज्या दिव
 घेठनी, सें अण मिल के गाते अंका भेल छितारा तुरते पुत
 ला पनाया करजुगते विधा का धनी ॥ (उडान) अम अण
 असमें डाका, हे नाम धरा गधुपत लाला, जे अडा क्रिया
 थाकी पर पुजा, दल देभते रहेना किसी को आने भति देना
 हाथमें तसुल थामे रहना कहे पारपती ॥ १ ॥ जल जण
 शिव आते अणे मन्दल के तछ धाते सुण से गनपत
 ज्या हरभाते नहिं दुगा मना रे हरिसमें आये संकर
 मारा गधु के सिर अकर सिर अमा छ-द्रासन में उंकर
 लगी लोथ तंउदन ॥ जे जण मन्दल आते सुण से पूछे
 गौरा आते जोकी जेठा था गधुपत ज्योकर आये पावन
 (उडान) सीन सुनो रानी गौरा, शीन सुवन क्रिष्ठा था
 अडा, पाद सन्मुण हमसे तो लडा, जवाह जण ना ह
 टा हमने अकर से सिर कटा वे तो फिरता लोटा लोटा
 धंउधंउ धंउती ॥ २ ॥ ते तुमने ज्या पाया अकर आलक
 पै यलाया रो रो गौरा ने हरमाया संजु से अयन जे
 न नददी सिर को लाना मेरे आलक को अलाना तन की
 तपन पुजना नद कर भोजन ॥ अेन अन्न नद पांउ
 अपने आलक के वृध पांउ उसके सुरत के अल न्द मेरा
 प्यारा गन (उडान) गन गये शिव सिर दुंढन, फिरत
 हंरती था कुंजन, काह काट सिर लाये शरन, काह करतण
 करते धड पर जम्माया सिर पूपते उसके दन्तों उपर न
 उते हीरे लाल माती ॥ ३ ॥ गाह गौरा महारानी ओ शिव
 संकर अंतर नभी मिल के करते दीनो प्राणी आरत गन
 की । लाम लडका जण जिथा पानी गौरा ने नद पिया शिव
 ने परदान दे दिया जेथी हुअ मन की ॥ भीम मुकट अल
 जल जलके गधु के नेगा यमयम यमके भावा पुहप की

मक्ष ममके न्यारी छभि उनकी (उडान) तु नाम सुन जि
 धन डरे, वा वा मनकी देव करे, हे हाथ जिस जन उपर
 धरे, साम अलक्ष लज्ज राप्ते नीची दुस्मन की कर राप्ते
 लडु मोहप्यतका याप्ते मंगल मुरती ॥ ४ ॥ हम ल हंड
 में कहेते मानी अरथा तुजसे पुछते जलदी कर खाना ता
 कीदे छोडे गिकट कथन । धन जेगिन सिर उपर आया हस्ती
 का सिर कट कर रकपा उस हस्ती पे किरका सीन करे म
 थन (उडान) वडी दिकर तुजे लगाध, गुर रिसाधगिरा
 से राह पाध, पीरपुस आसाराम छन्द महारी के सरन
 म गाछ गावे दिकर जम गडु कहे अेती ॥ ५ ॥

सःवष्ठी.

सरस्वति जेठ कंठ मेरे । में तो तेरा दास आस यरनोकी
 रभु तेरी ॥ कि पिरथम में सुमरो तुमको । सदा सुरस्व
 ति माता आशरा तेरा हे हमको ॥ अकल पुध तुही देत
 सथको । जिस पर होती दयाल करती निहाल उस जन को ॥
 भवन में जेठा महरानी । कला तेरी तीन लोक जनी ॥
 सुरस्वती हे गुनकी दानी । दईवन्दों का दुष हरनी ॥ ह
 री दुष ह लिहर मेरे ॥ १ ॥ हंसकी असवारी साने । गले
 पुलों की माल छत्र सिर सोनेका राने ॥ शारदा भवन
 भीय राने । धटा की धनधोर टिकारा नौपत का पाने ॥
 जे कोध दरसन की आवे । की हरे हो निहाल जवे ॥
 जेध मांगे सोध पावे । की मनकी छिन्हा भर जवे ॥ जे
 मनमें धरे रहें धीरे ॥ २ ॥ कि छिरहे मान मुझे देना ।
 तुम हो गुनकी दाता माता तनका दुष दुर करना ॥ अरज
 मुज गरीप की सुनना । देव ग्यान उपदेश शारदा हुं मत
 का खाना ॥ करों कुछ जन पर अप्य दाया । कि परथम में
 तुमकी धाया ॥ सभा में तेरेध गुन गाया । कला तेरी ज

डी महमाया ॥ कि तुमको धावे संसारे ॥ ४ ॥ कि जे
 नर सुरस्वति के धाता नहीं रहे मत हीन गान वे
 हिरहे में पाता ॥ तुररे वाला इड में कहेता दुर्ध मुजे
 परसन सरस्वती गुनकी पिधाता ॥ रिसालागिर मुरसद
 की दाया आन सरस्वती से पाया ॥ दयालयन्द ने यंग
 अडकाया ॥ महारीने छन्द कथ अया । कलगी वालों के मा
 न आरे ॥ में तो तेरा दास आस अरनों की रभु तेरे ॥४॥

लावणी.

नृप सत्तमकी देण तपस्या भये प्रसन्न संलु भोला ॥ टेका
 भक्त आपनो जनि भगीरथ जटा का इंधा अट भोला ।
 तीन धार भई तीन लोक में चौदह भुवन जका परताप ।
 सुरनर मुनी जन सकल देवता सेस सरीजे करे हो
 जप ॥ दरस परस भंजन के कीन्हे मिटे सत्रै तन मन
 की ताप । आगम निगम अप्पान करत हे अह सनात
 न आपे आप । जल गम्भीर तीर में भारी बीर जत्रि
 नका टोणा ॥ १ ॥ जत कुजत किसान जडा था किया क
 म छन कभी न नेक । भोर होत जप धर से निकल
 श्रिया नाम गंगाजका अेका धाय जैल के भोवन लाग
 लगा सींग गिरा हल के ईंक । सुधर गध पापी की काया
 भीटे दुःख सुख भयो अनेक ॥ भयो हर ३५ गल नाग
 पिराजत कर विभुतका लिम्मे गोला ॥ २ ॥ काठी कलंगी
 अधम अधरमी न्हाय तुरत इल पावे यारा व्हे पिरंय
 आसन पर जेठे कर रहे जेठों का ड्यार ॥ अहु शिव व्हे कैला
 स सिधारे स्वर्प का करे भियार । काई कृश्र व्हे मुरलि य
 जवे लपि यम दूत भये लायार ॥ उर्ध्व लोक को सकल सि
 धारे पाय पाय निरमल योत्रा ॥ ३ ॥ अदभुत लीला महा

रानीकी वार कर रही निहार । तारुं चन्द्र दुध से उलपल
 हार भये गल मुक्ता हार ॥ हंसनकी पांती सरमाती नि
 नकी जग में अजग्य पहार । चन्द्र आरती सदा उतारे
 अस्तुते करी सभी रहे निहार कहे हार चरन देखि यह कड
 तुक सिंहासन यम का डोला भक्त आपनो जनि भगीरथ
 नटा . का . चन्द्रा अट जोला ॥ ४ ॥

सावणी

श्री जे जे गंगा धारा । तारनी पलक तें तारा ॥ टेक ॥ कह
 लग कहिअे नस तेरे । तें तारे सन्त धनेरी ॥ जिसके
 तही काल धेरे । टालते करे नहि देरे ॥ हे साध सन्त
 का दाता ॥ दरशन से संकट जाता न्हाय ज्ञान अति
 आता । काटती सकल जन्मस धार तेरी आरा ॥ १ ॥
 तेरे आर दिसाके नाके । चल रहे नीर सलिलाके ॥ ज्या
 गानि ज्या कंगाले । तेरेच चरन सिर धाले ॥ तेरी लडा
 रे आनंद करनी । दुःख दारिद जनको हरनी ॥ श्री जे जे
 गंगा जननी । तें तार दिये रैदास जनि जग सारा ॥ रा
 राज्म चन्द्र रेन दिन धाते । संकरल ध्यान लगाते ॥ हा
 नोये दैत थरते । करना करि करि जते ॥ ते चार भंड
 हे राणे । उर धरी नीर के आपे ॥ अंटको नछया देती जे ।
 जिन धाये आडे आये कज सुधारा ॥ ३ ॥ कहे रिसाल
 गिर के येले । श्री गंगाज्म प्याले ॥ अधर निराली अ
 ले । अकलेसे गाते दयाले ॥ दंगल के अहर आया आ
 कर यग भडकाया ॥ श्री गंगा रभना दया अनिज
 शानिने तछ आसरा थारा । तारनी पलक तें तारा ॥ ८ ॥

हावणी.

जना जनी हसरथके लाला. सने सिर सेहरा अहुंत
 आला। टेका सभा सभ मनमे बुधसाध। श्री रामजी की-ही
 व्यतुराध ॥ पलक में पिनाक उठाई। तोडते पार नही
 लाध ॥ (दोहा) मेखी रति रंभा मदन निरप्पी छपीयो
 ३५। तीन लोक जय जय करे छकित लयो सभ लुप ॥
 अजय छपि सुरत मवयाव। जना जना हसरथ के ला
 ला ॥ १ ॥ सने तन जमा जरी का जेर। लाल पर
 लगी केसरीया जोर ॥ जियोके सिया पिया की ओर।
 हरे नर भारी मजन बहु ओर। (दोहा) मेहदी लगी सु
 हावनी कंगना पांघे हाथ। पीत पसन कटि सों कसे ल
 अन गिर लिये साथ ॥ पहिरे गल मोतिन के माला।
 जना जना हसरथ के लाला ॥ २ ॥ अवध सों परात स
 ल आध। जनक ने जेरी रयवाध ॥ योक मोतीन के पु
 रयाध। जनकी रधुपर से व्याही (दोहा) दिये दान स
 नमान कर पूज जन की आस। जयक मंगल गावते म
 नमे पही उवास ॥ हरे तिसुवन के जम जला। जना
 जना हसरथ के लाला ॥ ३ ॥ जिहा जय राधव महाराजे।
 सकल मज पाण रथ साने ॥ दुन्दभी आनंद के पाणे।
 द्युपिपुर तिरहुंत छपि जाणे (दोहा) परसुराम के गर्ज
 के पल में की-हो नास, मुक्ति लकित पाई जहां हरे य
 रन अर्न के दास ॥ हरे जयो पलमें कसला। जना ज
 ना हसरथ के लाला ॥ ४ ॥

हावणी.

कधी तो हेरा करे हसन धर गिरवर गिरधारी।
 लया उभावा मुझे दरस कय देवजे अनवारी ॥ टेका वो हाकुरे
 जहुन-हुन कांकी द्विप्राय न आके। तलकत लपरा मेरा

तेरे बिन मम बिछुंटे भिखुंटे ॥ सवन सुनी रस बरी अ
सुरी मन ले गया छंखुंटे । तज दिया आवन जन मेरे
अह और नत सखुंटे ॥ यही मेरे अ क्रोध आली री क
इं नतन क्या री ॥ १ ॥ मेरे छिरदे अस गध छिंवे
पिताम्बर पट की । प्रेम पगी अंसी सुन मधुपन नित
नठिं सटकी ॥ वो नट नागर छेख लंगर के काज छिरं भ
टकी । छही मछी कर पुकारती लछ गोरस की मठकी ।
दुंठे अंछे हेरान कछी नछी भिले मुकट धारीना २ ॥ तन
मन व्याकुल मेरा बिना देये राधापर को । निस आसर
सपि नींद न आवे री आली हमको ॥ लखत नहिं अ
हमार हो हम अंवर छिरत अन को । पत्र पत्र दुंठली क
दम की डालन में हर को ॥ दुंठे अन अन अहुंत कहुं ना
भिले मुकट धारी ॥ ३ ॥ रिसालगिर उस्ताद अडे हे साग
र मानो के । निन अतलार्थ राई प्याल कथ गांठि कृश्र
अके ॥ आसाराम औ पीरअकस कहे कलगी वाले सटके
भसहुर हुंअे छन्द रे मुहकोंपर दयाल मदारी के ॥ गावे र
मपरसाद औ दृषीहीन इड में भिड के । दोनो गंगु कहे
छि माने शंभु लेव छां के ॥ जोले दौलतराम सदा सुररे
का नकशा हे नारी । लगा उभाहा मुजे दरस कण देवगे अन
वारी ॥ ४ ॥

सावझी.

आवेगो नन्दलाल डालेगो अंसीको नल सपियां होवेगी
जेहाल सारी जेअस री । प्रण के कुंजमे असकरन आजे
गी जेरन असुरी ॥ टेका तेअसें आहीर आवत कालिंद्र की ती
र आनंत अंसी हे गंभीर अहरी और लसरी । सापी
त साबिस सनाकरे श्रीपति अंग मानी सस री ॥ अ सु

न पावे तान जवे आवे वाडी जन जयसें बनक य
 डी हे कान कहे ज्ञान हंसरी । छल कसमं . शाहद छक
 म की हुंकम से गध गसरी ॥ जेर पुसी से जवे म
 भीयो पुप जपर जतलावे जंसी सुन्नेसे जान आवे
 गावे जसरी । दयाल दामोदर जने निरदर्य हर वे यि
 त जय हंसरी ॥ जरा मान ले जात करती नौक जिक
 र दिन रात में ना जनुं जिलत धात क्या दिन इसरी
 (वृजके) रुप रंग लप लेत हमका हरहि से हेत अप तुं
 तीर न जकर जेत मान आपसरी । जेर जपर हे जेर
 डाकलि जयां से ले कसरी ॥ सरली की जनजर सुनती
 सारी वृजकी नार शामा दिल् के डाल वार जजे आल
 सरी ॥ म्याजस र श्यामकी शकल में हे जैसा रस
 री । सपर सपुरी जन सुरत साइ साइ पहयान जं
 सी सुन्ने से कर कान नागन ले इसरी । जर्म जेइ
 जरर जयां हो तीतर से पसरी पसरी । तरह तरह से
 आवे ताकत जेर हमे दिपलावे हमसे कहा कही हो ज
 वे इउके नस नसरी ॥ (वृजके) जलम जुलमी जेर
 जहर आता हे जडी जेर जुलमों से मोहे मन मोर जो
 र पछी पसरी । जेन जदल सें अनप्य अकल से जल
 जन्दन धसरी ॥ गादिल करे न गोर करता गरज द
 गा हर डोर जवतो ताक रहा कुछ जोर बीजत मसं
 री ॥ कहेर कल की जोक कायुतर के देता टोक जन जती
 लो री रोक कहे सप्यसरी । कृत्र कन्हैया करे जैसा र
 ग कान्ह हे पारसरी ॥ गिरधारी महाराज गावे गुन
 की रागनी साज हमतो परमहंस सी जान जने जस त
 सरी (वृजके) जावे हमारे ज्याल हुंठो दिल्ही भर मे
 याल उल्लु के हीजे निकल जे राकसरी । मन से पी
 सारो छियो यन्द्रमा देप के भावसरी ॥ निकला जना

छर प्याल यह नावक की तीर तु तो चिडा नहक जेपीरा
 तुंजे युठभस री। पार पार मन पाह वाह डोपल तक
 कर रही यस यस री॥ हरेवा हर आप हम तो जंपते
 वनक जप गावे' जमुना सिंध की छाप हे पुरकस री ॥
 बार यकी से' कहुं मान भरी हे ठसठस री ॥ दुर्गासिंध
 के छन्द सिंधु सायर हे आनन्द बिनको सुन सुन के हुं
 जे पन्द भागे मुयरस री। वृष क कुंजमे असकरन वा
 नैगी भेरन असुरी ॥

सावणी

असार ध्यान शिव हरिहरका रे, करआसन पात्रपरका,
 अगडण्य अगडण्य डिमाक डिमाक डिं प्याले उमर शिव
 शंकरका. ॥ टेक ॥ १

अंग त्रिभुति लजाव दिया शिव, हाथ लीया निशदिन जोणा,
 कुलास होकर दोटे मसाणुमे, जे साहेप शंकर जोला ॥ अ. २ ॥
 जोपरीमे जोवन करता, गिरिन लये सो अरधांगा,
 सुरनरमुनीवर ध्यानधरे, कोछ देवता लये अहसुना. अ. ३ ॥
 त्रिसुलसे त्रिपुरासुर मारयो, तीन नेन दीजे अधिकारी;
 नागन डेरा कुंडल पीराने, यडे जेलकी असवारी ॥ अ. ४ ॥
 कुंडी ने कुरका लेकर गौरी, धुंठ पीलावे निशदिन अंभ;
 गजे इंडकी माला पीराने, बटा जूट ओर शिर वहे अंगा. अ. ५ ॥
 जिअसे कंठ हुवा निला, गगन नाम मुअसे जोल्या;
 ठंडा शीतल लहेर हुवाजप, प्रेम भजनमे शिव जोल्या. अ. ६ ॥
 जे हाडी भांगे वनकु देवे, जे साहेप शंकर जोणा,
 आक धतुरो आप आरोगे, दुध कुर कोछकु देता ॥ अ. ७ ॥
 शींगी शेखी शिवकुं सोहीये. जोसे भगवा पडु रंग;
 करडुंडी शिर छत्र मिराने, जोडी हे सुंदर नव रंग ॥ अ. ८ ॥

એક રાણી તોરી એરા પારવતી, દુહા રાણી શિવ અરધંગ,
ત્રીજી રાણી અસલ ભિલાંદે, જટાગુટ શિર વહેતી ગંગા
અસાર. ॥ ૯ ॥

એક રાણી તોરા ચંદન ધસતી, દુહા જલ ભર લાવેગી ;
ત્રીજી રાણી ધુપ દીપને, ચૈથી જ્ઞેત જલાવેગી. ॥અ.॥૧૦॥
તુકારામ ઉસ્તાના મોહે, સાહેબ કે અધસે બહું રંગ,
દેખ દાખલા પોથી પુરાણમે, મતકર બાતા અગડબંગ. ॥
અસાર. ॥ ૧૧ ॥

લાવણી.

જય જય હયે શિવ પરમ પરાક્રમ, ઓંકારે શિવ તમ શરણુ,
શિવ નમામી શંકર ભવામી શંકર તુમ શરણુ ॥ ટેક ॥ ૧ ॥
દશભુજ મંડલ પંચ વદન શિવ. ત્રિનયન શોભિત શિવ સુખકંઠ
જટાગુટ શિવ મુકુટ બિરાજે, શ્રવણે કુંડલ અતિ રમણુ ॥જય
જય ॥ ૨ ॥ લલાટ ચમકત રજની નાયક, પયાંભુપ ગવરીશ,
ત્રિસુલ ચમકત વિદ્યાત શોભા, ડિમ ડિમ બાજે દિન મધુરં ॥
જય જય ॥ ૩ ॥ જય અરમાંબર વ્યાઘ્રાંબર હર, કપાલ મા
લા ગંગેશ, પંચ વદનપર ગણુપતિ શોભા, પૃષ્ઠે ગિરિપતિ
જયાં લેશં ॥ જય જય ॥ ૪ ॥ ભસ્મ લેપિત સરવાંગે હર, નં
દી વાહન અતિ રમણુ. વામાંગે ગિરિરાજ બિરાજે, ઘંટા ન.દ
દ્વીન મધુરં ॥ જય જય ॥ ૫ ॥ સિદ્ધેશ્વર મમરેશ્વર શંકર,
કૃપિલેશ્વર શિવ ક્રોટેશં, કપિલા સગમ નિરમળ જળ છે. કોટી
તીરથ ભય હરણુ. ॥ જય જય ॥ ૬ ॥ નર્મદા કવેરી સગમ મ
ધ્યે, શાભીત ગિરી શિખરં, ઇદ્રાદિક સુર સેવિત નિશદિન,
રંભા નૃત્યનિ દિન મધુરં ॥ જય જય ॥ ૭ ॥ મંગલ મુર્તી
પ્રલયાકષ્ટપદ, અદ્ભુત શોભા મૃદુ ભુવનં, શુક સનકાદિક પઠને
સ્તોત્રં, મનવાંછીત ફલ ભય હરણુ. ॥ જય જય ॥ ૮ ॥ ૫

ष्याष्टक पद भाहेश्वर, रययति निर्मल पद संगम. पुष्पकृपा
त्रिगुण्युत्तम सदाशिव, पतीत पावन लय हरणुं ॥ नय नय ॥
॥ ६ ॥ शिव नमामी शंकर लवामी शंकर हर हर शंकर तुम
शरणु.

श्री शिव स्वरूप दर्शन.

भुज शिव शिव ओयरेनां. शिव रूप समज दृढ करनां० टेक
गंग तरंग अंग शिर शोभित, भाण पिराजत अंद्र कणा,
कंठ इंदमणी माल व्याल पडु, लस्मलूत लय हरनां. मु. १
स्फटिक स्वेत वत तन कर कांति, नयन कमण त्रय धारी,
गोमा वाम अंगे सोहृत जून, अदलुत अकण मियरनां. मु. २
शिव समाधिमे निजपद ध्यावत, सो शिव सय घट प्याप रखा.
द्रश्य त्याग सो शिवपद दित्त धर, फिर न योरासीमे फिरना. ३
सुछम स्युल सत्य सय नाडिं, सत्य आतमा आप मडा,
देव कृण्य अनुभव यह गावत, लीमज सत्य समजनां. मु. ४०

श्री राम दर्शन.

अतर डो पट जेाल रे तोकुं राम मिलेगे अंतर. टेक.
सय घट घट मे राम रमैया, कठिन पयन मत जेाल रे. तोकुं. १
रग मेहेलमे जेत जगत हे, आसन से मत डोल रे. तोकुं. २
यद सणी लज पालकृष्ण छय, अनहद पानत डोल रे. तोकुं. ३

श्री प्रेम लक्षणा लक्षित.

काहु भिध मिल जय गिरधारी, काहु भिध मिल जय गिरधारी;
काहु मेसा जतन पतावे, काहु भिध मिल जय गिरधारी, टेक

ગોકુલ દુંડી બિંદ્રાબન દુંડીરે, દુંડ લીન ખજ સારી. કાહું. ૧
અમિલ અભમિલ આપ ઓધાર્યો કીએ સાલ હમારી. કાહું ૨

શ્રી અખંડ આનંદ.

અનુંભવી આનંદમાં ગોવિંદ ગાવે રે. (ખેવાર) ટેક.
વેહેતા જલનાં વેગમાં, પ્રતિબિંબ ન ભાસે રે.
જહાં લગીન્મન ડગમગે, નહીં અલ્પ પ્રકાશે રે. અનુંભવી ૧
કસરી ફેરી ગંધથી કરી, ફ્રોટિક ત્રાસે રે,
આતમનાં ઉદય થકી, અજ્ઞાન નાસે રે. અનુંભવી. ૨
મરિ જીવ્યાનો મારગ તે જન, કોઇક જાણે રે ;
મુકુંદદાસ અનુંભવી મહા સુખને માણે રે. અનુંભવી. ૩

શ્રી કૃષ્ણ ભક્તિ

જગીએ અજરાજ કુંવર નંદકે દુલારે.
નંદ કે દુલારે માત યશોદા કે પ્યારે.
જગીએ અજરાજ કુંવર નંદ કે દુલારે. ટેક.
સુરજ ઉગો પ્રાત ભયો, છિપ ગયે સખ તારે,
અંદ્ર કળા લીન ભઇ સુરજ કે અજવારે. જગીએ. ૧
મથુરાંમે જન્મ લિયો ગોકુલ સધારે,
કંસકોં નિરવંસ કીઓ. પુતના પહારે. જગીએ. ૨
અજપર જખ ઈંદ્ર કોપ, શુવાલ ખાલ હારે,
પ્રભુજી પતિત પાવન, અપિચલ અદ પારે. જગીએ. ૩
જમુનામેં ગેંદ પડી, શુવાલ ખાલ હારે,
કાલીનાગ નાથદા તારેં, કૃષ્ણ ભયે કારે. જગીએ. ૪
અસુરનકો નાસ કીઓ, દેવતા સુધારે,
સુર રયામ શરણુ સાર, દીજીઓ હમારે જગીએ. ૫

શ્રી રામ ભક્તિ.

જાગીએ રમુનાથ કુંવર પંછી વન ખોલે,
 પંછી વન ખોલે લાલ. ચિડીઆ વન ખોલે. જાગીએ. ૧
 પ્રાત ભારું પ્રગટ ભયો, રજનિકેલિમિર ગયો,
 ભમર કરત કુંજગાન. કમલ કલ પ્રકુલે. જાગીએ. ૨
 ચંદ્ર કીરણ શીતલ ભષ, ચંદ્રી પીઆકું મિલન મષ,
 અતિ સુગંધ અતિ સુગંધ પવન મંદ દોલે. જાગી ૨
 તુલશીદાસ અતિ આનંદ નિરખત મુખારપિંદ,
 દીનકું પ્રભુ દેત દાન, આનંદ અમોલે. જાગીએ. ૩



શ્રી જગનાથજીની જાખી

આજની ધડીરે ધન, આજની ધડી;
 અમે નિરખ્યા જગનાથ, ધન આજની ધડી. ૧
 વર્ણ અઠારે એકઠા જમે, રૂડી રીતડી;
 એક ખીજના મુખમાં આલે પુરણ પ્રીતડી. આજ. ૨
 જગનો જીવન જોઈને જોયું, ભરી આંખડી,
 મુખકું દીઠે પાતક નાસે, છાતડી ઠરી. આજ. ૩
 રાત દિવસ હૃદયમાં રાખું, મેલું નહીં ધડી;
 દાસ વેરાનાસ્વામીની સાથે, જીવની જડી. ૪



ગરખી

વહાલો મારો કુંજમાં વાય છે વાંસલી રે લોલ,
 નાદે વીધી છે મારી વાંસળી રે લોલ. ૧
 હુંનો સુણતાં ભુલી સહુ યાતુરી રે લોલ,
 મળવા થઈછું અતિ આતુરી રે લોલ. ૨
 ત્યાંધાવેલી લાગી છે મારો તનમાં રે લોલ,

गोठतुं नथी कंछ लुवनमां रे लोल. ३

भाहारं यित्त योहोटे नहीं धरमां रे लोल;

पेहुं छे मन धनश्याममां रे लोल. ४

सभी हावां तो भणी सुभ महावीये रे लोल,

महीहुं वेम्माने मन्ने यालिमे रे लोल. ५

सभी मुने मोहन बाजे छे धरौ मीठो रे लोल,

अवर अहवो तो नथी हीठो रे लोल. ६

धन हहाये ते अवतारमां रे लोल.

रभीये श्री नंदकुमारमां रे लोल. ७

वहालो मणतां सहु सुभ आपरी रे लोल,

सेहेने संताप सहु आपरी रे लोल. ८

सामजो सागर उहसासने रे लोल,

प्राणु लुवन दासने रे लोल. ९

गरभे।

गरभे रभवाने गोरी नीसरयारे लोल,

राधिका रंगीली अभिराम व्रजवासणी रे लोल

ताणी हेता वागे अंजर जुमपारे लोल. राधिका रंगिनी २

संगमां साहेली थील छे धणी रे लोल,

कांछक कहुं तेनां नाम व्रीजवासणी रे लोल;

ताणी हेतां वागे अंजर जुमपारे लोल;

गिडगिड ताम छुम छुम छुमके पान्जे धुधरारे लोल ताणी २

अंद्र भागाने अंद्रावणीरे लोल,

अंपकलता आरे ३प व्रीज. ताणी. गिडगिड:

ललिता विशाखा व्रीज मगाणा रे लोल,

माधवीने मासती अनुप व्रीज. ताणा. गिडगिड. ३

मन्मथमुहा ने मन आप्तुरी लोल

हंसा हरसा ने हीरा नाम व्रीज. ताणी. गिडगिड;

Handwritten signature

કેતકી પ્રગલ્ભા પ્રેમ મજરી રે લોલ,
એ આદે સખી સુખધામ વિજ. તાળી ગિડગિડ. ૪
વિધવિધ વાજ્ર વાજ્રે છંદમાં રે લોલ,
તાલ સ્વરે મળી કરે ગાન વ્રીજ. તાળી ગિડગિડ;
લોલ કહેતાં તે અધર અરુણ આપતા રે લોલ,
લટકે નમી મેળવે સહુ મા વ્રીજ તાળી ગિડગિડ ૫
ખેલ રચ્યો તે વૃંદાવનમારે લોલ,
બંસીબટ ચોકરસ રૂપ વિજ તાળી ગિડગિડ;
ગરબો જોવાને ગિરધર આવિયારે લોલ
મોહ્યા નિરખી સ્વામાનું સ્વરૂપ વ્રીજ. તાળી. ગિડગિડ ૬
શ્યામ મોહ્યા તેમ શામની રે લોલ
વાપ્યો ખેહુ અંગમાં અનંગ વ્રીજ તાળી ગિડગિડ;
લલિતા લખ મેળવ્યાંની કુન્જમારે લોલ,
રસ ભરયાં રમાડાં રતિ રંગ વ્રીજ. તાળી ગિડગિડ ૭
આનંદ સાગર તાંહાં ઊછેલ્યોરે લોલ,
મગન થયાં લાડલીને લાલ વિજ. તાળી. ગિડગિડ
પરમ પવિત્ર એ ચરિત્રનેરે લોલ,
દાસ દયો ગાઇ થયો નિહાલ વિજ. તાળી ગિડગિડ. ૮

ગરબી

રાતલડી, કોહોની સગે જાગ્યા,
ધાએલછોજ નેનઆણુ કંઈનાં વાગ્યાં. રાતલડી. ટેક
વાંકલડું તમ સમુ કંઈયે જોયું,
મોહનછો કંઈ મોહિનીયે મન મોહ્યું;
કેઇ પ્રાણ પ્યારી કરી ચિત પ્રોયું. રાત. ૧
ભલા ભગવત વચનના સાચા,
કોહોની કાલે કેવી વધાતા વાચ્યા;
તુરતના તુરત દેખાયા કાચા રાત. ૨

जुहासुं तंत न करवो ज्ञाने,
भोल ज्योती राकता नशी कांछ साज्जे,
जुहा सम भातां लभार न लाज्जे. रात० ३
छारनां विन्ड हे छे उर देभा,
अधर पर हीसे छे अंजन देभा,
भणी भणी ज्ञय छे नेत्रनी भेभा. रात० ४
जे सुं रम्भा रजनी लागी ते व्यभोली,
जुहे तितुं नाम ज्वा ज्ये छे ज्योली,
तेनां सम तमने कडो दिव ज्योली. रात० ५
अभीत छे आवो लभारेक पोडोडो,
पलोडुं पाज्ये मटे अम घोडो,
व्यांगखले उला व्याणस शीद मोडो. रात० ६
राज्युं भुज प्रसन -हृदयमां दाधी,
जशे पसी वस्तुं अमुलिक दाधी.
समज्युं स्थामा लीधुं काम सत्थी. रात० ७
सामा साभी नेन नेहनां भणीयां,
छुट्युं मान सुंभ सिंधुमां भणियां.
दयाना प्रीतम भेहुं पसंगे दधीयां. रात० ८

गरणी.

हुं शु नाल्युं को वाले मुजमां सुं हीडु,
कारे वारे सामु भाजे मुज लागे भीहुं हुं शु नाल्युं ज्ये.
हुं नडि जण भरवा त्यां पुडे आवे,
पमर ज्योलाज्ये वहासे ज्हेलडु यदावे. हुं शु नाल्युं ज्ये
बहु.ने तरछोडु तोये रीस न लावे,
कांछ कांछ भीजे भारे धेर आवी ज्येलावे. हुं शु नाल्युं ज्ये

દુર થકી દેખી વહાલો મુને દોડવો આવી દોરે,
 પોતાની માળા કાઢી પેરાવે મારી કોટે. હું શુ જાણું જે
 મુને એકલડી દેખી ત્યાં મારે પાલવે લાગે.
 રંક થઇ કાંઇ કાંઇ મારી પાસે માંગે. હું શુ જાણું જે
 મુને જ્યાં જ્યાં જાતી જાણે ત્યાં એ આવી દુકે,
 યેની દયાનો પ્રીતમ મ્હારી કુડ નવ મુકે, હું શુ જાણું જે

ગરબી.

રૂપાળા શ્રી રણુછોડણ, રાજ, રૂપાળા શ્રી રણુછોડ છે ટેક
 રાત્ર દિવસ મન ભમે છે રસિયામાં,
 નીરખવાના ઘણા કોડ છેજ, રાજ રૂપાળા ૧
 શ્રી શકરપણુ શિવજીનુ સર્વસ,
 ઉપનીષદોની ચોડ છેજ, રાજ રૂપાળા ૨
 ઉપમા દેવા નથી કોઇ ખીજડાં,
 એ અલભેલો અભોડ છેજ, રાજ રૂપાળા. ૩
 એહને મુકીને ખીમને ઉમળે જે,
 તેમાં મેરૂ જેવડી ખોડ છેજ, રાજ રૂપાળા. ૪
 ડાકોરના ઠાકોર નથી વાહલા તે,
 સ્વાન વૃપભતો જોડ છેજ. રાજ રૂપાળા. ૫
 પ્રગટ સુરજ છે સંસારમાં દયા પ્રભુ,
 દેખેનાં ઓળખે તે ઘોડછેજ. રાજ રૂપાળા. ૬

પદ રાગ ગરબી.

લટકાળા નંદજીના લાલ હો, કાના કામણુગારાહો,
 મોહન મોરલી વાળા હો, માવા બહું મરમાળા હો, ટેક
 ગોપી જનને ઘેલી કરવા. વગાડો ચિઠલ વેણુ
 કામનીઓના કાળજ હરવા, કાના એ તારાં કેહેણુ લટકાળાજ

રાસ મંડળની રચનફ રમવા, વૃજ વનિતાની સાથ.
 ખદ મહિનાની રજની કીધી, નકી તે નટવરનાથ. લટકાળા. ૨
 બેલડીએ ખાળા વળગાડી, નાચ્યા નંદના લાલ,
 થન થન થેઘ થેઘકાર કરી ખહું વાહાલા તે જલુચો બહાલ. ૩
 મોળ વરસની સુંદરીએ સૌ, શોભે શશી સમાન,
 એવઝ અનેક આ શશી સ્વરૂપમાં, ચળકી રહ્યા ભગવાન. ૪
 અનેક વૃજ વનિતાએ થઇને, દરચો નંદકીશોર.
 બેલડીએ ખાંઝી સહું ખાળા, બોલે બોલ કઠોર. લટકાળા ૫
 શાંન થઇ સુંદર વર સૌના, સુણુતા સ્નેહે વેણુ.
 જયસંગના સ્વામીશુ તેથી, નારી સૌ નચવે નેણુ લટ. ૬

પદ રાગ ગરબી.

ચાલોને અલબેલી સખીએ, કૃષ્ણ તણી પુઠે જઇએ,
 વિઠ્ઠલવર વિણુનું વૃજ વરણ, વિઠ્ઠલવર સાથે વશીએ. ચાલો
 છોગાળે છેતરી છેહ દીધી, અણુધાર્યો ઉડી ચાલ્યો,
 નિશ્ચય નાથ નકટ થઈ નાહો, તે ક્યમ આવે ઝટ ઝાલ્યો. ચા. ૨
 સ્નેહ લગાડી સામળીએ શા માટે પરદેશ પરવરીયો,
 પરવરીયો તો ભક્તે પરવંદીયો, પણ શા સાર ઠગ ઠરીયો. ચા ૩
 ખાળાપણુ મદ માનો ફરતો, માખણુ મહી ચોરી ખાતો,
 પ્રીતમ એમ પજવતો સાને, તે કુમ આજ રીસાઇ જતો. ચા. ૪
 ગોકુળની ગોવાલણી વિણુ એ, કોહો કોના ગોરસ ખાશે,
 વાહાલા વિણુ વૃજવનિતા વચમાં, વાંસલડી કોહો કોણુ વાશે ચા ૫
 સાચી પ્રીત અમારી સમજ સામળીઆ આ અરણુ દ્યો.
 જયસંગના સ્વામી શરણાંગત દિન દાસીને દરશન દ્યો. ચા. ૬

પદ રાગ ગરબી.

દેખ અલી એ રાધે તારો, નટવરનાથ રીસાઈ ચાલ્યો,
 કેહે કડવાં શાં કેહેણુ તે કીધાં, કે આ ઝગડો ધર ધાલ્યો. દે. ૧

भावतुं भोजन नव डीधुं? डे नव डीधु कांछ कहुं ?
शी रसीयाने रांठ पडी ते, रंग मही आ भंग थयुं. दृष. २
प्रेम करी ते पान पटीशु, पातणीआने कर न धरी;
डेतेकारणु सामणीआे आ वहाल तलु विपरीत करी दृष अ. ३
रंग राग रंगरसीया साथे, रंग भेर राधे न रमी शकी;
जयसंगनो स्वामी सामणीआे, तेथी प्रज वज्याज नडी. द. ४

पह राग गरपी

ना ना सपी नडी भे नटवर नाथने नव डेहेणु कहुं;
काण तणा कभथी निश्चय आ, थवा काण ते सेहेज थयुं. १
स्नेह करी सामणीआे भारी, साथे वादविवाद करी;
सयन करी सय्यापर पोढी पाछली रात्रे कुय करी २
रमतां जमतां रंगरसियो नित्य, द्वाराभतीने याद करी;
निसासो नांपीने रडतो निश्चय नेनमां नीर भरी ३
काछ गोपीआे कांछ कहुं नथी. डेहेतो सपी सोगन आड;
जयसंगना स्वामी विलु हुं अडी, अवनीमां अहुं अकणाडि. ४

पह राग गरपी

प्रज वनिता आवुं न वदशोरे, वांकु अमाइं ॥ टेक ॥
प्रज वनिता आवुं न वदशो, डेकट डुल्यां नव डरशो,
शाणा सधजे नव डरशोरे, वांकु अमाइं. प्रज वनिता. १
डाहो काणंदरिने कांछे, गोपीआे डाधने गांछे;
अेड अंकुश हुं तम माथे रे. वांकु अमाइं. प्रज वनिता. २
भारेअम थछ डेम लुडया, थीर काहाडी जणमां डुल्या;
अेम डेम डाहापणुमां डुल्यां रे वांकु अमाइं. प्रज वनिता. ३
मुकी मानव भरगादा, सौ देव गांधरव दादा,
गणुया नव काछ अेकादा रे, वांकु अमाइं प्रज वनिता. ४

શુ શરદ રતુની રાતે, મેં તેડયાં હતાં મધ્યરાતે ?
 રહી રાતિ ગયાં પરભાતે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતાં. ૫
 મુજને એકાલો ભાળી, સહ સખીઓ દેધને તાળી,
 ઘેરી લ્યો ક્ષુધટ વાળીરે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા ૬
 જળ જમનાંથી જળ લાવી, મુજને હેતે ખોલાવી,
 ખેહેકુલાં લ્યો ઉતરાવીરે. વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા, ૭
 મને તેડી માખણુ ખાંને, સહ સખીઓ છાને માને,
 વીત'ડો તે કોણુ જણે રે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા. ૮
 માંટે મરજદે રહેશો, જયસંગ કોધને નવ કહેશો,
 સમજીને સઘળુ સેહેશોરે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા. ૯

૫૬ રાગ ગરબી.

આધા રોહાને અલખેલડા,
 અહીંયાંથી તમે આધા રોને અલખેલડા. ટેક.
 સેલો વાળીને ગાય દોવા હું ખેડી,
 હારે અવજાની પશુ હેઠ પેઠી. અહીંયાંથી. ૧
 સ્યામ શરીર તારૂં જોધ નંદલાલા,
 હારે આતો ગામ જરે કાળા. અહીંયાથી ૦ ૨
 મોર મુગટ તારો શીર પેચ દેખી,
 હારે ગાય ખીએ વગડાતુ પશુ પેખી અહીંયાથી ૦ ૩
 જુઓ જુઓ કાનજી ગાય આ નાઠી,
 હારે આવી શી નટવર લાઠી. અહીંયાથી ૦ ૪
 ધરનો પતિ મારો ઘેર નથી તેથી,
 હારે વદુ છુ આટલુ મરજદથી. અહીંયાંથી ૦ ૫
 પાડોશણુ મારી પુરી વેરણુ છે,
 હારે જાણુશે તો અતિ આવરણુ છે. અહીંયાંથી ૦ ૬

જયસગનો સ્વામી સુણી આ તુઠીયો
હારે હશી તાગી દષ હઠીયો,

અહીંયાંથી ૭

૫૬ રાગ ગરબી.

મોર મુગટ ધારી, એહેની પેલો મોર મુગટ ધારી,
વાહલો મને લાગે એ મોરારી, એહેની પેલો મોર મુગટ ધારી. ટેક.
વૃંદાવનમાં વાંસળી વાયે, હૈકુ હારો જાએ. એની પેલો ૧
પાવું પીવુ મને ગમે નહી કાંઈ. ગમે નહી ધર માંહી. એની ૨
મહી વેચવા મથુરાં જતી જણી ઘાટ રોકે દાણી. એની પેલો ૩
નંદ કીશોરને નજરે હું નીરખી, હૈયામાં જાઉ હરખી. એની ૪
નંદ કીશોરને ઉભા રાખી અહી, જાવું ગમે મને નહી એની ૫
માથેથી મટુકી મહીડાંની ઉતારી, આરોગાવું ગીરધારી. એની ૬
મહીડાં આરોગીને મોહન મારી, મુખકુ ધુંએ ભરો જરી. એની ૭
પ્રીતમની પ્રિતમાં હું પછી લપટાવું મહી વેચવા ભુલી જાઉં. એ ૮
સાંજ પડે રવી આથમે જ્યારે, ઘેર આવું હું ત્યારે એની ૯
જયસગનો સ્વામી રંગ રશીયો, પુદ છોડી નવ ખશીયો. એ. ૧૦

૫૬ રાગ ગરબી.

પ્યારા મુજ ઘેર આવોરે, પ્યારી પર પ્રીત કરી,
પનઘટ પર આ એદુ રે કિતાવળી આવું ભરી, ૧
ખાધુ નહી ફરાયેરે, અહીઆથી આજ હવે,
સરખી સઉ સાહેલીરે, બાજે મને મેણાં દવે. ૨
માટે જઈ ઉભા રોહોનેરે, આંગણુલામાં આજ તમે,
મુજ પાડોસી ફરાંરે છોકરડાં તો ત્યાંજ રમે. ૩
તમે તેને હુલાવીરે, કુજાવી ત્યાં ફરતા ફરો,
કાંઈ પુછે તો કહેજેરે રખે કાંઈ રોશ ધરો. ૪
હું તો આહી આવ્યો છુ રે, રોતાં સુણી બાજ ખહું.

છાનાં છપનાં મેં રાખ્યારે, ઝાઝું શુંજ કહું ૫
 એટલામાં હું આવીશરે દોડી દોડી દ્વાર ભણી.
 ચિત ચિંતા ન કરશો રે, મોડું થાય તેહ તણી. ૬
 લોહચુંબક ખેચેરે, લોહાને પ્રીત કરી,
 તેમ મનડું આ મારે ખેચાય છે મોહ ધરી ૭
 માટે કાહો કમ ભુલું રે, વેળાની વાતલડી.
 નવ દેખુંતો તમનેરે, છાની બળે છતડકી. ૮
 ધ્યારા પૃથ્વીમાં બહુ છે રે, પ્રેમી પુરુષોજ વળી,
 પણ તમ સાથે મારીરે મેળાપની ગાંઠ, વળી. ૯
 વળી તે વળી જણોરે, છોડતાં તો છુટે નહીં
 ખેડી સજ્જડ સારીરે કહું કહું શું હુજ કથી. કહી ૧૦
 નાંખે નીરનું જો નાનુંરે, માછલડું કાષ્ટ પયની મહી.
 તો તે કદીએ ન જીવેરે, એવી ગતી મારી અહીં. ૧૧
 દેખું દુનિઆમા દાહાડીરે, મરદ સહું મેરી રૂપે,
 એક મરદમાં મારીરે, નજર તમમાંહી ખુપે. ૧૨
 બાકી સહુ વેસધારીરે, મારે મન દીસે ખસ,
 માટે જયસંગ સહનેરે, દ્રષ્ટિથી મેં કીધા પરા. ૧૩



પ્રથમ દર્શન ગરબી

મોહન તારી મોરલીને તું વાર રે, મોહન તારી મોરલીને તું વાર.
 નહીતો વિપરીત વાત થનારરે, મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ટેક.
 એરે મોરલીએ મારાં મન હરી લીધાં રે,
 મોખીને ઘેલાં કીધાં રે; મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ૧
 મોરલીનો સાદ સુણી મળવાને માટે રે,
 ખેડાં મુકીને આવી ધાટરે; મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ૨
 સાસુરે સસરો મારાં જોઈ જોડાંણીરે,
 વાત આતો સરવં જણીરે, મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ૩

Handwritten signature or mark.

नेशंगना स्वामी तमे समजवो शांने रे.

तोपणु मनहुं नद मानेरे मोहन तारी मोरलीने तुं वार. ४



पद

शंकर स्तुति

कगनवा मोरा करसे सरक गयो रे. ओ—राग
सजन अहु शेवो, शिव भोगा नाथरे; पातीक दुर जवे. संपत
सुभ थावे ॥ सजन. ॥१॥ कैंलासनीवासीरे, भक्ति
तेरी आसीरे; करे जे नर नार पामे ते भव पार, परो
तुं तारनार, नमु जेडी हाथरे ॥ सजन. ॥ २ ॥ जय त्रिपुरा-
री रे, जगत आधारी रे. लीला छे प्रभु तारी, मंद मति
छे मारी, कहुं छु तारी वारी, करो माक पाप रे ॥ सजन ॥३॥
मदादेव महिभारे, वरणुव करतारे; पार न पामे कोर्ध,
वीयार करी जेध पूरणु कीधो अल्प स्वल्प अरे आतरे ।
सजन ॥ ४ ॥ जय जगतारणु रे, अधम उधारणु रे ;
जन्म भरणु जय, अवियल पद थाय, जेने तुं सहाय था
गाय गोकणदास रे ॥ सजन ॥ ५ ॥

पद

संगत संतनकी करले, जनमका सारथक कछु कर ले—टेक
वित्तम देही नर पाया प्राणी—धसका हीन कछु कर ले,
सदगुणु शरणु जके आत्मा जनम भरणु दुर कर ले—संगत. १
कहांसे आवे कहांकु जवे—ओ कछु मालुम कर ले,
दो दीनकी छंदगानी यारो—हुशीयार होकर यल ले—संगत २
कान कीसीके जेइ लउके—कान कीसीके साले,
जदलग पलोमें पछसा भाइ—तदलग भीडा ओले—संगत ३

કહેત કપીરા સુન ભાઇ સાધુ-બાર બાર નહી આના;
અપના હીત કષ્ટુ કર લે બધ્યા-આખર એકલા જના-સં. ૪

પદ

સંગત મત કરના ખોટી, દુનીઆ ઉલટી હચ્ચે જુઠી-ટૂક.
સગા ભાઇ સો ખુરા ખોલે-સાલેકું સનમાના,
માઈ બાપતો ભીખ માગે-સસરેકું જમખાના-સંગત. ૧।
જીસકા લેવે ઉસ ધમકાવે-આત ખોલે તીનિ;
સાધુ સંતકું કષ્ટુ ન માને-રખે કાનપર પધરી-સંગત ૨।।
કઉરી કઉરી માયા જોડી-લાખ કરોરા મોટા;
ચીઠી આઇ જોદ રામજીકી-ખોલ ગયા લંગોટા-સંગત. ૩।।
કહેત કપીરા સુન ભાઇ સાધુ દુનીઆં બધ દીવાની;
મહાદેવકું છોડી દીયા ચોર પુજવા જાય ભવાની-સંગત. ૪।

પદ

ખેલ સખ પેસેકા, સખ કુછ ખાતાં હે પેસા-ટૂક.
પેસા જોડ પેસા લરકા-પેસા બાપ્યા બહેનાં;
પેસા હાતી ઘોડે પલાના-પેસા લગે નીશાનાં-ખેલ. ૧।।
પેસા દેવ, પેસા ધરમ-પેસા સખ કુછ ભાઈ;
પેસા રાજ રાજ કરાવે-પેસા કરે લઢાઇ-ખેલ. ૨।।
પેસા હાતીપે અખુજ ચડાવે-પેસા ઘોડે ઉરાવે;
એક દીન પેસા બદલ ગયા તો-પાઉમેં લગર પરાવે-ખેલ ૩
પેસા ગુરૂ પેસા ચેલા-પેસા ભકતી કરાવે;
કહેત કપીરા સુન ભાઇ સાધુ-પેસા જીવ છોરાવે. ખેલ ૪।।

પદ

સખ પસેકા ભાઇ, દીલકા સાથી નહી કાઇ-ટૂક
ખાને ખીનેકું પેસા હોય તો-જોડ અંદગી કરે;
એક દીન ખાના નહી મીલે તો-શીરકે જવાબ કરે. સખ ૧।।
જીવજીગ અપને પત્રોમે પધસા-તખ લોક સલામ કરે;

અપના પઈસા નીકલ ગયા તો—કોઈ નહી મીઠા ખોલે—સખ ૨
બાઈ અંધ ઓર બહેન સાલે—સખ પેસેકા બાઈ;
દીલકા સાથી કોઈ નહી રે—કહેત કપ્પીર સુનાઈ—સખ. ૩

૫૬

ક્યાં ગયોરે પેલો મેરલીવાલો, અમારાં ધુંધટ ખોલીરે.
ક્યાં ગયોરે પેલો વાંસળીવાળો, અમને રંગમાં રોળી.રે ટેક.
લમણાં વેણો ગુથી હતી પેરી કસુંબલ ચોળીરે,
માત જશોદા રાખ પુરે છે, કેસર છાટયાં ગોળીરે. ક્યાં ગયોરે
જળ જમુનાં બરવા ગયાં તાં, બેડુ નાખ્યુ ઢોળીરે,
પાતળિયો પરપંચે બરીયો, અમે તે અખળા બોળીરે ૨
પ્રેમતણી પ્રેમદાને અંતર, ગેખનિ મારી ગોળીરે,
મીરાંઆઈ કહે પ્રભુ ગિરિધર નાગર, ચરણ કમલ ચિત ચોળીરે ૩

૫૬.

હારે કોઈ માધવ લ્યો માધવ લ્યો, વેચતી વૃજ નારીરે હારે,
માધવને મટુકીમાં ઘાલી, ગોપી લટકે લટકે ચાલીરે. હારે.
હારે ગોપિ ઘેલી શું ખોલતી જાય, કાન મટુકીમાં ન સમાયરે,
નવ માનો તો જુવો ઉતારી, માંહી જુવે તો કુંજબિહારી, હારે.
વૃંદાવનમાં બતા ધારી, વાલો ગૌ ચારે છે મિરઘારીરે, હારે
ગોપ ચાલી વૃંદાવન વાટે, સૌ વૃજની ગોપિયો લાથેરે. હારે
મીરાં કહે પ્રભુ ગિરિધર નામર, જેનાં ચરણ કમળ સુખ સાગ
રે. હારે

૫૬

ચીત લાગ્યું મહાવિર તોરે ચરણનસે એ—રાગ
ધ્યાન લાગ્યું મહાદેવ તોરે ચરણનસે; ચરણનસે હર ચરણનસે ॥
ધ્યાન ૧૫ સોમવારકુ સેવક આવી સેવા કરત પ્રભુ તનમનસે

ध्यान २॥ मनमोहन तोरे दरशन करनसे पाप छुटत सय्य तन म
नसे ध्यान ॥३॥ अक धडी प्रभु तें अजे जपेतो; उरे क्युं शीर जम
कीकरसे ॥ ध्यान ॥ ४ ॥ शुक्र सनकादिक जपत अहोनिश;
छंछा करंत भव तरननसे ॥ ध्यान ॥ ५ ॥ गोकुलद्वस उर
आस तुमारी; रापो प्रभु मोहे यरष्युनसे ॥ ध्यान ॥ ६ ॥

पद

भव लजन गुनं जाडिंगी, रमते रामकुं रीजडिंगी—भव
लजन ॥ टेक ॥ अन अन जडिं पतर नही तोरं—ना में
डाल सताडिंगी डाल डाल पीय सखीज—युरी
युरी सीस नमाडिंगी—रमते. १॥

जडी न रापुं पुत्री न रापुं—नामें अर्ध कडाडिंगी,
सदगुरु अर्ध मीसे अवीनासी—उनसे हात वेप्पाडिंगी—२॥
करशन कटारा करशन के—आंधु नेनके आन यजाडिंगी.
पांय मोहोर पयीस असकर—मुजसे मुजरे आडिंगी—रम० ३
पांय मुपी गंगा जल लेकर—मान गुमान आडिंगी,
सय साधनके रतन मीसा के—माथे साथ यदाडिंगी रम, ४
तीरथ जडिं में जलमे नाडुं—ना में जव सताडिंगी,
कडे कपीर सुन बाछ साधु—मनही तीलक लगाडिंगी— ५

—*—

पद-राग-सामथी

लोयन मननोरे जगडो लोयन मननो,
नसिया ते जननोरे. के जगडो लोयन मननो. टेक.
प्रीत प्रथम डोले करी नंद कुवरनी साथ,
मन कडे लोयन तें करी, लोयन कडे तारे हाथ. जगडो १
नटवर निरभ्या नेन तें, सुख आव्युं तुंज भाग;

પછિ બંધાવ્યું મુજને લગન લગાડી આગ. ઝગડો લોચન ૨
 સુણ્ય ચક્ષુ હું પાંગુણું, તું માહરં વાહન;
 નિગમ અગમ કહિ સાંભળ્યું દીક્ષવના ગયું મન. ઝગડો ૩
 ભયું કરાવ્યું મેં તને સુદર વર સંજોગ,
 મને તજી તુ નીત મજે, હું રહું દુઃખ વિયોગ ઝગડો ૪
 વનમાં વહાલાજીકને, હુંય વસુ છું નેણુ;
 પણ તુંને નવ મેળવે, હું નવ ભોગવું એન. ઝગડો. ૫
 ઘટેન નથી મન કથમ તને ભેટે શ્યાંમ શરીર;
 દુઃખ માહારે જાણે જગત, રાત્ર દિવસ વહે નીર ઝગડો. ૬
 મન કહે ધીક -હદે, ધુમ્ર પ્રજટ ત્યાં હોય,
 તે તુજને લાગેરે નેન. નેહ થકી તું રોય. ઝગડો ૭
 એ ખેહું આબ્યાં યુદ્ધિ કને, તેણે ચુકાવ્યો ન્યાય,
 મન લોચનનો પ્રાણુ તું, લોચન, તું મન કાય ઝગડો ૮
 સુખથી સુખ દુઃખ દુઃખથી, મન લોચન એ રીત,
 દયા પ્રીતમ શ્રી કૃષ્ણુ શુ. ખેહું વડેથી પ્રીત. ઝગડો ૯



રાગ (મુજે છોડ ચલા બનજારા)

જય જય જય જગદાધારા; શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય. ॥ ૧ ॥
 મુજ ચરણે નમાવું શીશ, જય જય ગીરજાપતી ઈશ જી;
 ધર ધ્યાન તમાઈ વલાલા શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય. ॥ ૨ ॥
 બમ બમ બમ બમ બમ ભોળા, ધરો હાથે ભસ્મના ગોળાજી;
 ભક્તોનાં દુઃખ હરનારા, શિવશંકરે ભોળા પ્યારા. જય. ॥ ૩ ॥
 શોભે ગણે ઈન્દ્રની માત્રા, શિરે વહે ગંગાની ધારા જી;
 આપ્તુલનાથ ટેકરીવાલા, શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય ॥ ૪ ॥
 સ્વામી શભો સુખ સુખ કારી, ચીત ધરો વિનતી મારીજી;
 ભક્તોને સહાય કરનારા, શિવશંકર ભોળા પ્યારા જય. ॥ ૫ ॥
 અરપુ ભાંગ ધતુરો ભાવે, જન્મ મરણથી મુકાવે જી,

थरुँ दास पुण्डुं यरलु ताहरा, शिवशंकर भोगा प्यारा. न्य. ६।
 अहलुत लीला प्रलु तारी. लुत प्रेतनी टोणी लारी ल;
 हर हर दुःख हरनारा, शिवशंकर भोगा प्यारा. न्य, ७।
 भोपरीमे भोजन करतां, नीशदीन लहेरमां करतां ल;
 त्रीसुणसे त्रीपुरकु मारा, शिवशंकर भोगा प्यारा. न्य ॥ ८ ॥
 न्य न्य न्य शिव ओंकारा मन वांछीत कृण हेनारा ल,
 गावे गोकुणदास गुणु तारा, शिवशंकर भोगा प्यारा. न्य ९।

होरी

कैसी होरी दिखाडिं आन कहुं मोहन पाडिं । टेक । हार गछ
 तुम सख वृजवाला में नंदलाल हराडिं । हेभा री मेरो अल
 पिताउन कैसी अल पिताडिं । पिताउन नाम धराडि ॥ आ.
 छीन लेडि वाडी आंकी मुरलिया आंको मुकट हराडि । आं-
 के डी सुध के नाके में काटु ता आंकी कलाडि । आंके पिदारी
 अनाडि ॥ आ० ॥ अंजन से द्रग अंजन आंजनि रंजन
 नाम मिटाडिं । नाक थीय नकपेसर हे के नाक यने पिनवाडिं ।
 होरी को स्वाद यभाडिं ॥ आ० ॥ लाल गुलाल आदल
 छाडिं रंग को मेह परसाडिं । थीर अथीर डी । अणुली ऊ-
 म ऊम यमयम यम यमकाडिं । धमार मवार री गाडिं ॥
 आ० ॥ केसर कीय कपोल लगाडि तन मन हार पटाडिं ॥
 नागर अंग अनंग लगनडि यरन पंसि अलि नडि । क्षमा
 अपराध कराडिं ॥ आन कहुं मोहन पाडिं, कैसी होरी दि-
 खाडिं ॥ १ ॥

होरी

अन में फिर थीन अलु हे । टेक । १ हिले थीन सुनीने
 राधे आधी मुध आधे लु हे । अल नें थीन सुनी नें स्या-
 मा मेरे जन न लु हे । आगे हिली भरलु हे । १ ॥

रस रंग सुड रही हे ललिता बाज तजे हे । तनक बनक सुन
 पीन प्रपीना अनको जत भलु हे । नेक हियरे न ललुहे
 ॥ अ० ॥ या पीने वृंजपनितन पर मेनकी सेन सलु हे ।
 भारत तान पान सम कस कस लेत सराशर लुहे । अधि
 कसी उपलु हे, अ० ॥ अरजेगी अरजे नन्दनंदनको वाते
 कदा गरलु हे । ओर लुव निरलुव जमत जड सरलुवन
 दरलु हे । वाहे ते कर अरलु हे, अ० ॥ जे होगी सो होय
 रहेगी जेहि अिधि अिधि सरलु हे । तु नागर नागर प्रलु
 पगपर परत सदा यिरलु हे । यहे दीनो अरलु हे । प्रज
 मे द्विर पीन अलु हे ॥ २ ॥

होरी

सांवरै तोसो अरज हमारी । टेक । अरमासुर वरदान पाय
 के मनमें कपट अियारी । अरमासुर को अरम कियो तुम
 पल में आय मुरारी । अिया शिव लु की टारी । (सां०)
 जनकनन्दनी हरि लंकापति मान कियो अति भारी,
 रावन भारि गरद करि डारयो सुवरण लका जरी । अछ
 तीहुं पुर उजियारी (सां०) दृष्ट दृसासन थीर वसीटल
 कृष्णा जेअ पुकारी । नगन कृपदि कालु न देपी अम्पर
 दयो हे पीलारी दृष्टि कइना सो निलारी (सां०) कसी
 भारयो कंस पछारयो पटक पुतना डारी । जन दरअरन
 अरन अिलारी हरिहे अिपति हमारी । पडो लु में शरन
 तिलारी । सांवरै तोसो अरज हमारी ॥ ३ ॥

होरी

अवधपुर धुममयी होरी जेअत राजकुमार ॥ टेक ॥ राम
 लखमन अरत शत्रहन करि रहे अजय अहार । अत ते
 भाअ जनकनन्दनी कर पियुकारि संभार (अवध) रघुपति
 हरअि निरअि सिय मुअ को दियो गुलाल अय हारे

साज लरी त्रीभोवन महाराणी करत रंगकी मार (अवध)
रति रत्ना अडि करत अयम्भा महन गयो मन हारा
कहे हरयवन दोउिन की छपि लपि भगन सयै नरनार
अवधपूर धुममयी हारी जेसत राजकुमार ॥ ४ ॥

हारी

हारी कुंजन आंगु लघ श्याम श्यामभो ॥ टेक ॥ आल
आल गुथ संभ मोहन लीन्हो करि करि साज नध)
ग्यानिनि नुथ सिंगार साज के राधे साथे लघ (श्याम
नायत श्याम नयावति राधे लसि लसि ताल दध । विश्व
इप छपि हरेत हरि के सय सपि श्याम लघ श्यामा
श्याम सो हारी कुंजन आंगु लघ ॥ ५ ॥

हारी

अजमे जनि आनु असो री ॥ टेक ॥ ग्यात्र सभा सय
संग लियो हे दुंठत फिरत सय जोरी । जेदि पावन ते
रि रंगमे आरत अदियां पकर जकजेरी । जोल द्रग डिन
यित लो री (वज) धेर लियो हरि सय सपियन मित
राधा मजत मुअरो री । विश्व इप छपि हेपि श्याम की
अति आनंद अढो री । लजे यह जेस मयो री । (वज) ६

हारी

छेना कामेमे जेवोंगी क्षग । टेक । तुंम तो यले पर देश
पियारे जय कलक गुन लाग (छेना) तुंम भिन को यह मा
यन हारी मेरी प्रेम को आग । जय यह पेड मधेन लये
रे नाथ साज तजि लाग । छेना कामेमे जेवोंगी क्षग ॥७॥

हारी

साज की अतियां अय न सहुंगी । टेक ॥ जे तुम जोरी
अरी हरी कहिहो अक की लाअन मेहुं कहुंगी (साज) जे
अयना तुंम मेरी गहागे मेहुं तेरो सिर पाग गहुंगी ।

ચોટી પકડ ચમોટી બનઇ હે, વાહી કરંગી મેં જો જી ચંહું
 ગી (લાજ કી) જોં તુમ લોલ કપોલ પરસિહો તો ચુટકી
 ભરી નાંક ધરંગી । જો અંગિયા પર હાથ ચલેહો હાથ છો
 ડે બિન મેં ન રહુંગી (લાજકી) દુર સે બાત કરો મન મો
 હન સખ સુખ મેં યાહી મે લહુંગી । જો લખિ લેહૈ નાથ
 આજ કહું તો જમુના ખીચ જાય બહુંગી (લાજ કી) ॥૮॥

સવૈયા

મો મનમેં નિહચે સજની યહ તાત હુંતે પ્રન મેરો મહા
 હે । સુન્દર શ્યામ સુગન સિરોમનિ સો હિય મેં રમિ
 રામ રહા હે ॥ રીત પતીશ્રત રાખિ ચુકી મુખ બાખ
 ચુકી અપની દુલહા હે । ચાપ નિગોડો અઘૈ જરિ જહ
 ચઢો તો કહા ન ચઢો તો કહા હે ॥ ૧ ॥

સવૈયા

ટુટતહી ધનુ કે મિલિ મંગલ ગાઇ ઉઠી સગરી પુર બા
 લા । લે ચલી સીતહિ રામ કે પાસ સઘૈ મિલિ મન્દમરાલ
 કી ચાલા ॥ દેખત હી પિયકો હરિચન્દ મહા મુદ પુરિત
 ગાત રસાલા પ્યારી ને આપુને પ્રેમ કે જલ સી પ્યારે કે
 કઠ દઈ જો માલા ॥ ૨ ॥

સવૈયા

એક હેં ગૌતમ નારી કે તારક કૌસિક કે મખ કે મખ
 કે રખવારે । કહસીલા નન્દન નેન આનંદન એઇ હે પ્રાન
 જુડાવન હારે ॥ પ્રેમિન કે સુખ દેન મહા હરિચન્દ કે
 પ્રાન હુ તે અતિ પ્યારે । રાજદુલારી સિયા જુ કે દુલહ
 એઇ હે રાધવ રાજદુલારે ॥ ૩ ॥

सवैया

गार लसे उत भोरी उते उपमा छकहुं नही जत लही
हे । दूसरी आगी अनो होउ के छत यन्द्रिका याइ उते कु
लही हे ॥ मेहेदी पान महाअरे सों हरियन्ह महा सु
अमां उलही हे । दोहु सभै द्रग को कूल हेअहु दुलह
राम सिया दुलही हे ॥ ४ ॥

सवैया

दुलह त्यों दुलही को गुवां सभियान लछ सिवि जेलावन
लागी । लछ मुक्ता मनिमानिक हीरन पानि उछावन
लागी सोहागी ॥ श्री रघुराज जिदेह लली तहं दोहुन की
दुगुनी हति जगी । मानो हजरन तारन को रभियन्ह
धारन लागे सुरागी ॥ ५ ॥

सवैया

गावती गर्भ गहे गुन को मृद गीतन गोरी सु दधव हुं
गारिन हारे लला अय हारे लला अस लापती देती
तियां अहुं तारिन जती हमारी लली रघुराज मगाओ
द्रतछ अनुंज मुनि प्यारिन । नातो भियार के आत
जिदेह जेलाछ हे रावरेको महत्तारिन ॥ ६ ॥

सवैया

आतुरो यातुरी लुखि गछ सय मोहनी ३५ कीरीत परानी ।
रावरे को हगिवो रद्यो आवत आपुरे आपरे को पहियानी
जनकी जनी हती न सुजन लगे गुवा जेवन जतही
जनी यंयलता न यली रघुराज करी अली सो जे छटी
छल छानी ॥ ७ ॥

सवैया

कटे कसे कटि में यटकीने मण्डले महीष लक्ष्मा हे अनोपे
 योखडे लोयां मुकुतःक्षत्र भात्र सुतारावली छमि छीने अटोपे
 - जेवन क्षग सजे रघुराज सुराज कुमार महा यितयोपे ०
 अंगनी अंग उमंग लये जिन जेहत होत अनंग के
 धोपे ॥ ८ ॥

सवैया

हेमि सभ्नी सभ्नी राजकीसोरन यिनके योरन सो अनुरागी
 आजे अजवन लागी अनेकन गावन लागी धमारि सुरागी ॥
 आये नना अम आये लना अम जन न पावे सभान
 लठ लागी । श्रीरघुराज के धाय धरो अकि अरि के जोरीन
 संगहि लागी ॥ ९ ॥

सवैया

कोरि जोरी कही कहि के न श्रोंगी ज्यै लागि आप के
 पांछडोना । मोहि आनि कीसोरी की के अरजेरी अन
 धडों छोरी अथार्थ होना ॥ तुम योरी करी यीतकी रघुराज
 लना जे कहु लगी जघडो ना । अत्र अजारी के जोरी
 नु मोरों मुअ नो सिया सभ्नी इरी कडार्थडों ना ॥ १० ॥

सवैया

सो सभ्नि नागरिकी सुन आत दियो हरि हेरि हरे मुस
 काध । कोरि सुजन सभ्ना कछो नर्म कहुं रघुअसिन हार
 न पार्थ ॥ तुं कहे कसे वृथा अरी जैन धते पियकरिन
 की अरि लार्थ । हे रघुराज सभ्ना अजार्थ अजो पाथ के जे
 निसान अजार्थ ॥ ११ ॥

સવૈયા

કાગળ તો ના ઉઠે કર તે લિખની કર કંપિત કોન ઉઠાવે
લાલન દ્રષ્ટિ પરે જળ્ય તે વહ નાંમ સુને અંસુવા ઝર લા
વે ॥ પ્રેમ સખી મધુકી મખિયા મન જય કસ્યો દિરુ
હાથ ન આવે । મુરતિ શ્રી રઘુનંદન કી લિખતે ના બને
લખતે બનિ આવે ॥ ૧૨ ॥

સવૈયા

સીતા કથા સુનિ કે દસકન્દર બેજ્યો મરીચી કુરંગ બનાઇ
જનકી કી રૂપ રાખન કે હિત લઈ ધનુબાન ગયે પ્રભુ
ધાર્ઠ ॥ દોરત દુર દુરાત દેખાત લેવાઈ ગયો રઘુનાથે લો
ભાઇ । જનિ બલે તેહિ નાથ દલ્યો સર તે જિમિ દક્ષ
કો અક્ષ રિસાઈ ॥ ૧૩ ॥

સવૈયા

આપને હાથસોં દાહ ક્રિયોં જો ગયો મરી જનકી હેત
જટાઈ । ત્યોંહી કબન્ધકી સાપ છોડાઈ સરોવર મેં સ
વરી ફલ ખાઇ ॥ મિત્ર બનાઇ સુકંઠ કપીસ કે તાલહિ
બેધ્યો સુ બાન ચલાઇ । બાલિ કો મારિ કે બાલિ કે બં
ધુરા બાલિ કો રાજ દિયો રઘુરાઇ ॥ ૧૪ ॥

સવૈયા

દીપક જરી ધરયો મક ભીતર સુન્દર શ્યામ સખાઉ જિયારી
ચાર ચકોર ચહુંદિસિ ખેલત નાગ પચાસ ગરે મુખ બ
રી ॥ ખેલ ચડે ડમરૂં કર સોહંત ગંગ તરંગ જટા સિર
ધારી । તો સદા શિવ ધ્યાવત હોં કૈલાશપત્ની પતિ રાખુ
ગરી ॥ ૧૫ ॥

(४४)

सवैया

गंग कहे में इद्र करों गज यर्म के आल. अरु ज्याल ग.
में । कलिन्दि भाषत कान्ह करों अजमंडल के सिर
छत्र धरे में ॥ सारदहू कहे अहल करों धनश्याम यतुर
मुष्य अेद भरे में । पापी भरयो अेक अेनी में आय इ
इर परयो उनके अगमें ॥ १६ ॥

सवैया.

जे जन अेक सु कोस के अीय में थावर जंगम जे अ
पु डारे । त्यों त्यों लहे निरअन ततक्षन अक्षन ते द्विज
राम निहारे ॥ गौरि के छश कृपा करि के तहां ताडक मन्त
सुनाय के तारे । प्रभी पुरी. सी न अोर पुरी तिहुं लोक
में कीरति अेद पुकारे ॥ १७ ॥

सवैया

हेम पताके रथे इदरें त्यों अजरन मत मतंग! तुरंगा ॥
त्यों कनके कवये पहरे भट राम के देअन छाये उमंगा ॥
आर वधु करे मंगल गान लिये धट मंगल साओ के
संगा । आरही आर अिलों के अिमान भयो तिनको छन कल्प
अभंगा ॥ १८ ॥

सवैया

सुभ जोग महुरत साधि धडी कअि काव्य करे पढि अस्तुति
ते । कामना पुरणु तुं कर हेत जहां लागि हें जग
में सअ धेरी ॥ आन के हांव अमारो लग्यो भव सागर
पार करे अेहि अेरी । मेः पूकारत आरत हे जगदअ्य
दय करि ले सुधि अेरी ॥ १९ ॥

સવૈયા

એસો પરયો જગ કે પરપંચ મેં પુજા કરી નહિં રંચક
તેરી । તો કૃપયા કરિ પાયો અરામં સો નામના તેરો લિ
યો એક બેસી ॥ કામ મેં ક્રોધ મેં લોભ મેં મોહ મેં ગાન
હુંને મદને મત ઘેરી યા કલિકાલ કે આપત મેં પત રા
ખ્યો પારવતીપતિ મેરી ॥ ૧૯ ॥

કવિત

સેવકન મંદે દુખ દારિદ્ર જિહંડે અરદાચક અખંડે ખંડક
દુરજન કહા કહે । રાજે સિર ચન્દે મધવાદિ સુર બન્દે છાં
ડિ છાંડિ છલ છન્દે પદ પંકજ સદા ગહે ॥ એહી કવિ લા
લ એસે સધજકે સુતા કે સુત મેરે દુખ બાજે નહીં અવગુન
કહા ગહે । લીને ધનું સાયક અસુરરિ કુલ ધાયક સો એસે
ગનનાયક સહાયક સદા રહે ॥ ૧ ॥

કવિત

મોહન મન મૂસ પર મોહિત ગણેશ વેશ ગિરા હંસ ઉપર
સરસ સુખમાસની । પ્રેમ ભરે આછે હર કુટ કૈલાશ પ
ર સિંહ પર જિમલ ભવાની દુખનાસની ॥ જિધિ ઐઠિ
રચત નરાયણ કમલ પર ભારી વૈકુંઠ પર રમા સુખરાસની ।
ગુઠ ગુણ સહિત ગોવિન્દ હે કૃતિન્દ પૈ જિન્દ પૈ જિસદ જિ
રાજે જિન્દ આસની ॥ ૨ ॥

કવિત

સરન ગયે સદા ગોપ કે સમાન કરત જોત જગે જાકી રચ
ના ન નેક ન્યારી હે । ક્રોધ હો ક્રો કંસ કે બંસ ક્રો જિરાં
સ કીની થાપ કરિ દીન્યો હે જિભીશન રાજ ભારી હે ।

नाथ कृष्ण कहत जकी कलाके न कारापार जगमे अपार हु
ति जगे उज्यारी हे । यमुदा हुलारी सो तो हिये ते न
होत न्यारी अष्ट भुज धारी सो हमारी रंभवारी हे ॥३॥



कवित

सो मुष्णी सहस्र मुष्णी लक्ष मुष्णी डाठी मुष्णी अर्म अर्म
मुष्णी सदा गाजते रहत हे । जनत कर्मन्द भुज भारे
अस्त्रधारे दल दैतन दलन के तराजते रहत हे ॥ तीन लो
क उदर में राप्ति के गुदर करे कुदरत कौतुकी कला काजते
रहत हे । राजते रहत शोभा साजबे रहत जन आपने
के अभ्यिका नेवाजते रहत हे ॥ ४ ॥



कवित

एक ओर मांग मुक्तान की संवारी ऐनी एक ओर सेत
सेत सुरसरी धार हे । एक दग अंगन अनल दग दुस
रेने एक कान हार एक कुंडल सुहार हे ॥ एक कति अस
न करि कीकत एक ओर आधे मुंडमात्र आधे हीरन के
हार हे । आगिले यरणु में मधुर धुनि तुपुर की पाछिले
यरन में कृती की कुंकार हें ॥ ७ ॥

कवित

सोहत अनुप लाल पालयन्द दुधज के हरिपद जयमान
गंग सिर धारे हें । कर में कराल शुब लीन्हे सुल नास
न के उमर अजबे मुष्ण सिंगी धुधुकार हे ॥ कहत उदा
र नीलकंठ गर मुंडमात्र लोचन विशाल लाल कामदेव ज
रे हे । देवलि उभारे विश जरत निहारे भारे काशीपति
वारे सो हमारे रंभवारे हे ॥ ६ ॥

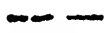
कवित

अमल कुमल सम यरन हरन मल मन मह नपत अम
र नयकार करे । रगत परन समलसत गरल धर लपत
अलन हल हरत थर थर ॥ महन सकल अस करत अ
यर यर करत अयर उर धरशत धर धर । हरहर अंगन
करत अल भग अत्र दरद न रहत कहत हर हर हर ॥१



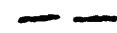
कवित

शिव नटा भ्यान ते कठी हे सैल सान यठी मठी मुठ पु
नि कर्हिन करार हे । अनत प्रसन धरयो सोकल भगीर
थ गु यमके यहुं दिसान भडिमा अपार हे ॥ हेजे पर
भारथी पुनीत अश्व पारभी ने ज्ञानी भट बीर ध्यानी क
रत अियार हे । अध अरि अरथ लुंथ गुंथ मथकारी
वे कामानो सुरसरी धार आधी अरग धार हे ॥ ८ ॥



कवित

शास्त्र को अयार हे अियार यार अेदन को नस हे प्रता
पी भगीरथ नरेस को । मुनिन को धाम अस्थान मुंठत ३
पिन को पान सुधा रस को यह गान हे गनेस को ॥ अुध के
प्रकार प्रतिहार अह्न लोक ही को दुअ वन्द काटिवे को तेज
हे दिनेस को । ज्ञान अिसार गिरिराज की कुमारिका के
गंगा के प्रवाह मोर भाला हे महेश को ॥९॥



कवित

तारे केते पतित उधारे केते अधमन को मुंठत को सुधारे
अंग अिमल करि डारे हें । नमपुर उगरे नमदुतन नि
करे नसों अित्र गुप्त डार अेके सुप हो अियारे हे ॥ १० ॥

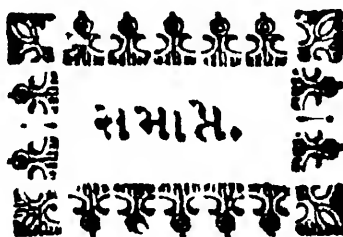
देनदारे सय रडे गमभारे दियो तुंरत नगारे बीर पाने
क की टारे हे ॥ गंगा के अरित्र न्यारे दास कडत ललकारे
तेरे ध्यान धारे तिन जाये पाप सारे हे ॥ १० ॥

— —
कवित

ज दिन ते देवनदी आठ महि मंडलमें ता दिन ते न
भगन के मुह गसि लाध हे । पापिन के पाप को रयेक न
दि रहन हेत जरि हेत जेसे तुंल आग किकाध हे ॥ कडत
केदार अेक पुन्दरुं क्रिये जे पान आलसहुं क्षीने नाम सुर
वास पाध हे । विधिवत नडाठ मन लाध गंग पुज करे
ताके इल कडिमे को सारदा युपाध हे ॥ ॥ ११ ॥

— —
कवित

सुर सरी कहेमे तो कुरोंगी महेश याही याकी प्रीत रीत
मे में गात के पभारे की । सारदा वभाने यह कमल मे
दि मेंही लेत कालिन्दी कहे कान्ह कुरोंगी सकारे की ॥ उधी
नाथ न्दात हे त्रीभेनी ज के संगम में महिमा अपार मे
दि भादि देह धारे की । जे लो तरे तरे तो लो जगरा के
अंजट में अेया अेयी हो रही वा पातकी जियारेकी ॥१२ ॥



જાહેર ખખર.

અમુલ્ય લાભ ગુમાવતા નહીં!

લોક પ્રિય વાંચવા લાયક, ખોધ દાયક, અતિ રસીક વારના-
ઓ. ગાયન, હીસાબ ગણીતનાં પુસ્તકો જથાખંધ અને છુટક
નીચે લખેલે ઠેકાણેથી મળશે. બહારગામના ગ્રાહકોને પોષ્ટેજ
તથા વેલ્યુપેએમલનો ખરચ વધારે પડશે.

પુસ્તકોનાં નામ.

ક. ર. આ પા.

જૈન વિવેક વાણી યાને જૈન ધર્મ સાર સંગ્રહ...	૩	૦	૦
જૈન જ્ઞાન પ્રકાશ કથા સંગ્રહ ભાગ ૧-૨ દરેકના	૨	૮	૦
જૈન કથા સંગ્રહ ભાગ ૧ લો... ..	૧	૦	૦
જૈન દીપક સ્તવનાવલી	૦	૪	૦
જૈન કથા સંગ્રહ ભાગ ૨	૦	૪	૦
ગોળ લાકડાના ગજ દોરીના હીસાબની છુક ...	૧	૦	૦
પગાર ગણીત... ..	૦	૬	૦
લોક પ્રીય કથા સંગ્રહ ભાગ ૧-૨ દરેકના ...	૦	૬	૦
ગરબા સાર સંગ્રહ... ..	૦	૪	૦
લોક પ્રીય ગાયન રસ ભાગ ૧-૨-૩-૪ દરેકના	૦	૪	૦
લોક પ્રીય કબીર પદ સંગ્રહ	૦	૪	૦
વૈષ્ણવ ધર્મ પ્રકાશ રાગમાળા ભાગ ૧	૦	૪	૦

મુખ્ય—કાલ્યાણદેવી—પંડિત જ્ઞાનારામ મુકુંદજી
અમદાવાદ—ગુજરાત વરનાથજીવર સોસાઇટી—રાજકોટ
લખમીચંદ ઉત્તમચંદ—ભાવનગર—જૈન ધર્મ પ્રકાશ સભા.

ગેલાભાઈ લીલાધર.

ઠેકાણું—કચ્છ મહારાઓશ્રી ખેંગારજી લાયબ્રેરી
મુખર્ષી માંડવી ખંદર.

